दादी प्रकाशमणि जी का 13 वां स्मृति दिवस (दिनचर्या तथा वतन का दिव्य सन्देश)

हम सबकी अति स्नेही, सबके दिलों पर राज्य करने वाली, ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका आदरणीय दादी प्रकाशमणि जी का 13 वां पुण्य स्मृति दिवस 25 अगस्त 2020 को बहुत स्नेह, सादगी और श्रधा के साथ मनाया गया। कोरोना महामारी के कारण इस अवसर पर भारत के कुछेक स्थानों से ही गिने-चुने भाई बहिनें इस पुण्य स्मृति दिवस पर शान्तिवन में 24 तारीख शाम तक पहुंच गये। इस बार शान्तिवन के भाईयों ने बहुत सुन्दर सादगी के साथ पूरे प्रकाश-स्तम्भ को फूल मालाओं से सजाया हुआ था। सवेरे से ही बरसात की ठण्डी फुव्वारे सभी का खूब स्वागत कर रही थी। साथ-साथ दादी जी की अनेकानेक विशेषताओं से सम्पन्न मधुर गीत बज रहे थे। मुरली क्लास के बाद सभी मुख्य दादियां वा भाई तथा भिन्न-भिन्न स्थानों से आये हुए सभी भाई बहिनें प्रकाश स्तम्भ पर पहुंच गये। बरसात के कारण वाटरप्रूफ टेन्ट प्रकाशस्तम्भ के बगीचे में लगाये गये थे। सभी सोशल डिस्ट्रेन्श को ध्यान पर रखते हुए दूर-दूर कुर्सियां डालकर बैठे थे। सभी सुरक्षा के हिसाब से मास्क भी पहने हुए थे। पहले कुछ समय सभी ने अपनी योगयुक्त स्थिति में रह मौन श्रंधाजलि अर्पित की। उसके पश्चात मधुर वाणी ग्रुप ने दादी जी की स्मृतियों में बहुत सुन्दर गीत गाया। फिर कतारबद्ध सभी अपनी स्नेह पुष्पाजंलि अर्पित करते गये। कुछ भाई बहिनें दादी क्वाटेज में दादी जी के कमरे में भी गये। उसके पश्चात 10.30 से 12.30 बजे तक अमीरचन्द भाई और निर्वैर भाई जी ने दादी जी के अंग संग के बहुत सुन्दर संस्मरण सुनाये। उसके पश्चात प्यारे बापदादा और मीठी दादी जी को शशी बहन ने भोग स्वीकार कराया। (सन्देश साथ में संलग्न है) तत्पश्चात मुन्नी बहन ने आये हुए भाई बहिनों को यज्ञ की ओर से स्नेह सौगात भेंट की। फिर सभी ने ब्रह्माभोजन पान किया। शाम के समय दादी जी के निमित्त विशेष योग तथा दादी जी के अंग-संग के अनुभव सुनाये गये। इस प्रकार यह यादगार दिन ड्रामा की रील में लिपट गया।

दिव्य सन्देश:-

आज अपनी प्यारी दादी जी के निमित्त सब भाई बहनों की यादप्यार लेके जैसे ही मैं वतन में पहुँची, तो देखा कि अनेक छोटी-छोटी लाइटस की मालाओं से वतन सजा हुआ था और उन मालाओं से बहुत प्यारा सा म्यूज़िक बज रहा था। उन मालाओं की लाइट से बहुत सुन्दर किरणें निकल रही थी जो लेज़र शो की तरह अलग-अलग डिजाइन बना रही थी। कुछ समय के बाद बाबा सामने आये और मुस्कराते हुए कहने लगे कि देखो दादी कहाँ है! तो इतने में देखती हूँ कि एक बहुत सुन्दर स्टार है, उसमें कभी बाबा तो कभी दादी साथ में दोनों दिखाई दे रहे थे। दादी का रूप कभी माँ के स्वरूप में तो कभी महाराजा के स्वरूप में और कभी शक्ति के रूप में दिखाई दे रहा था। बाबा भी इस दृश्य को देख मुस्कराते हुए कहने लगे कि देखा बच्ची का स्वरूप। इस पर दादी जी कहने लगी कि बाबा यह तो सब आपके ही रूप हैं। आपने ही सिखाया है, आपने ही आगे बढ़ाया है। तो बाबा मुस्कराते हुए कहने लगे कि जब बच्चे बाप को दिल में समा लेते हैं, तो बच्चे बाप के दिल में सदा विराजमान रहते हैं। फिर दादी कहती है जब बाबा को सभी ने अपनी दिल में बसा लिया है तो किसी के मन में दूसरे और तो कोई संकल्प नहीं होंगे ना! मैं तो शान्त खड़ी थी। तो दादी जी बोली, दादी जानती है कि दिल में तो बाप को बसाया है लेकिन कभी-कभी दिल के अन्दर दूसरी-दूसरी बातें आने लगती हैं, जिस कारण फिर बच्चे बाप को उल्हनें भी देते हैं और पुरुषार्थ में भी थोड़ा ढीलापन आने लगता है।

फिर दादी कहती है देखो, अभी समय क्या बता रहा है! दिल के अन्दर केवल बाबा को बसा करके सदा खुश रहना है और खुशी बांटनी है। फिर तो बाबा ने कहा देखो, दादी कैसे सबको प्यार कर रही है। फिर बाबा ने दादी को मधुबन के सभी डिपार्टमेंट का चक्कर लगवाया। एक बड़ी स्क्रीन में एक एक डिपार्टमेंट का चित्र आता जा रहा था, इसे देख दादी बहुत मुस्करा रही थी। तो दादी ने कहा कमाल है बाबा की, जो सभी बच्चों को इतना लायक बनाकरके सेवा की इतनी बड़ी जिम्मेवारियां दी हैं और सभी उस जिम्मेवारी को निभाते हुए बाबा का हाथ पकड़ करके चल रहे हैं।

फिर दादी ने सुनाया कि बाबा मुझे बीच-बीच में देश विदेश के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर भी चक्र लगवाते हैं। बाबा दिखाते हैं कि बच्चे कैसे-कैसे पुरुषार्थ कर रहे हैं। हर एक की सेवा और पुरुषार्थ देखकरके दादी कहती है कि सभी बहुत अच्छी कमाल कर रहे हैं लेकिन कोई-कोई बच्चे बाबा की पालना कर रिटर्न देने में कभी-कभी अलबेले भी हो जाते हैं। बाबा बच्चों से क्या रिटर्न चाहते हैं? तो दादी ने कहा कि बाबा चाहते हैं कि 1- सभी एक दो के साथी बनकरके, एक मत होकरके अपने संगठन के अन्दर ऐसी शुभ भावनाओं की लहर फैलायें जो विश्व के सामने एक एक्जाम्पल हो। संगठन का यह जो स्वरूप है यही विश्व परिवर्तन का कार्य सहज करेगा। 2- अभी जो हमारी नई दुनिया आने वाली है, उसके लक्षण अभी से हर एक में दिखाई दें। वह देवताई गुण जीवन से प्रत्यक्ष हों। अभी तक दादी देखती है कि बीच-बीच में अलबेलेपन के कारण मन में थोड़ा ढीलापन आ जाता है इसलिए जो अपनी नई दुनिया के संस्कार हैं उसको अब इमर्ज करें।

फिर दादी जी खुशी में झूमते हुए एक दो का हाथ पकड़ करके सबको नचा भी रही थी और कह रही थी कि ऐसे ही सदा खुश रहो, खुशी बांटते रहो और सदा दिलतख्तनशीन होकर रहो। उसके बाद मैंने दादी को कहा दादी आज तो सभी ने आपको बहुत याद दी है, आपके लिए भोग लाये हैं। तो बाबा ने कहा आज बाबा ही बच्ची को पहले खिलायेंगे। लेकिन दादी कहे नहीं मैं अपने हाथ से बाबा को खिलाऊंगी। तो पहले बाबा ने दादी को खिलाया और फिर दादी ने बाबा को खिलाया। फिर दादी ने अपने हाथ में भोग लेकरके कहा आओ, सब आओ बाबा के लाडले, बाबा के दिलतख्तनशीन बच्चे आओ। तो ऐसे बहुत सुन्दर टोली और वरदान देते हुए कहा कि सदा बाप के साथी बनकरके रहना और अपने चेहरे और चलन से बाप को प्रत्यक्ष करते रहना। फिर बाबा ने कहा कि बच्चों को अभी अपने अन्दर लाइटनेस धारण करनी है और बाप से मिले हुए वरदानों द्वारा लाइट के प्रकम्पन्न चारों ओर फैलाने हैं क्योंकि इस समय दुनिया के अन्दर सभी लोग दुआयें मांग रहे हैं और चाहते हैं कि परमात्मा कुछ ऐसा करे, जो सबके दु:ख दूर हो जाएं। तो यह कार्य अभी तुम बच्चों को करना है। आप बच्चों को जो परमात्म प्राप्तियां हुई हैं, उनसे बाप को प्रत्यक्ष करना है। ऐसे कहते बाबा ने और दादी जी ने सबको बहुत स्नेह से यादप्यार दिया और मैं साकार वतन में आ गई। ओम् शान्ति।